A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

हिन्दी चित्रपट संगीत में बहुधा प्रयुक्त पंजाबी लोक वाद्य

Dr. Simarpreet Kaur
Assistant Professor, University of Delhi, Delhi

OPEN ACCESS CC BY

सारांश

पंजाबी लोकसंगीत भारतीय अंचल में ही नही बल्कि विश्व भर में बहुत लोकप्रिय है। पंजाबी लोकगीत लय एवं वाद्य अपनी विशेषताओं एवं सरल व सहज अभिव्यक्ति हेतु पंजाबियों के साथ-साथ अन्य प्रान्तीय जनसमुहों में भी बहुप्रचलित हैं। इसी कारण हिन्दी चित्रपट संगीत में भी उसे सहृदय अपनाया गया। जहाँ एक ओर पंजाबी लोक गायन शैलियों का प्रयोग चित्रपटीय संगीत में प्रत्यक्ष है वहीं दूसरी ओर पंजाब के लोक वाद्यों का प्रयोग भी बहुदा देखा जा सकता है। ढोल, ढोलकी, तुम्बी, अलगोजे आदि कुछ ऐसे वाद्य है, जिनका प्रयोग पंजाबी लोक वादन शैली अनुसार, कई हिन्दी चित्रपटीय गीतों में स्पष्ट दिखता है तथा लोक-आकर्षण का मुख्य कारण भी माना जा सकता हैं। यह शोधपत्र हिन्दी चित्रपटीय संगीत में पंजाब के वाद्यों के प्रयोग पर एक संक्षिप्त चर्चा प्रस्तुत करता हैं जिसमें सन् 1941 से लेकर 2015 तक के अविस्मरणीय गीतों के उदाहरण प्रस्तुत हैं।

मूल शब्द *- हिन्दी चित्रपट संगीत, पंजाबी लोक संगीत, पंजाबी लोकवाद्य, लोक नृत्य, हिन्दी चलचित्र।*

शोध प्रविधि

- सामग्री – पुस्तके, शोध प्रबंध, शोधपत्र, ऑडियो-विडियो तथा इंटरनेट द्वारा विभिन्न वेबसाइट।
- कार्य विधि – प्रेक्षण विधि, मौलिक शोध विधि।

अध्ययन क्षेत्र

- यह शोधपत्र हिंदी चित्रपट संगीत में अपनाए गए पंजाबी लोक वाद्यों का एक संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत करता है एवं पंजाब कि लोक संस्कृति का भारतीय संस्कृति में समायोजन को दर्शाता हैं।

समावेशन मानदंड

- 1941 से लेकर 2015 तक के हिंदी चित्रपटी संगीत के लोकप्रिय गीत जिनमें पंजाबी लोकवाद्यों का प्रयोग बहुत सफल रहा।

बहिष्करण मानदंड

2015 के बाद भी पंजाबी लोक वाद्यों का प्रयोग हिंदी चित्रपट में अवश्य ही दिखता है परन्तु इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों के विकास से लोक वाद्यों की ध्वनियों का अनुकरण बहुत ही उत्तम ढंग से होने लगा है। मात्र श्रवण से यह अनुमान लगाना बहुत कठिन हैं के लोकवाद्यों का प्रयोग मूलरूप में हो रहा है या किसी तकनिकी उपकरण द्वारा आवाज़ निकाली जा रही है। फिल्मी गीतों के वाद्य संयोजन के विषय में कोई सटीक जानकारी देने का चलन नही है और केवल 'सुनने' मात्र से ही विभिन्न वाद्यों के प्रयोग का अनुमान लगाया जा सकता हैं। हालही में आया हिन्दी चित्रपट 'अमर सिंह चमकीला' (2024) में पंजाबी लोकवाद्यों का प्रयोग किया गया मिलता है परन्तु इस चित्रपट के गीतों को भी शामिल न करने का मुख्य कारण यह है कि, इसके गीत मशहुर पंजाबी गायक अमर सिंह चमकीला द्वारा रचित गीतों का हूबहू अनुकरण है जो मूल पंजाबी लोक गीत नही है इसलिए इस पत्र में 2015 तक के ही गीतों का आंकलन प्रस्तुत है।

भूमिका

हिन्दी चित्रपट संगीत का प्रभुत्व हमारे देश में एक प्रमुख संगीत शैली के रूप में स्थापित है। चित्रपट संगीत मुख्य रूप से चलचित्रों में उत्पन्न परिस्थितियों के अनुसार पृष्ठभूमि में प्रयुक्त संगीत एवं चलचित्रों के गीत हैं, जो चरित्रों एवं परिस्थितियों के भावों को दर्शाते हैं, साथ ही श्रोताओं का ध्यान आकृषित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यही नहीं भारत में अनेकों चलचित्रो की सफलता का श्रेय गीत-संगीत ही बनता आया है।

पंजाब की संस्कृति यहाँ के जनजीवन, कारोबार, मानसिक चेतना, धार्मिक चेतना एवम् सामाजिक चेतना का प्रतिबिंब है, जो अपने आप में बहुत ऊर्जावान एवं समृद्ध हैं तथा यह भी सर्वज्ञात है कि चित्रपट का मूल उद्देश्य मनोरंजन है। इसलिए समस्त भारतीय दर्शकों एवम् प्रेक्षकों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए पंजाबी संस्कृति का चित्रण एवम् उसके संगीत का प्रयोग आम हो गया है। सन् 1995 में प्रदर्शित चित्रपट 'दिलवाले

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

दुल्हनिया ले जांएगे', इसका सर्वोपरि उदाहरण है। फिल्म 'जब वी मेट', 'ओए लकी-लकी ओए', 'सिंघ इज़ किंग' आदि इसके कई ऐसे उदाहरण हैं जिनमें पंजाबी संगीत एवं उसमें प्रयुक्त साजो का खुलकर प्रयोग हुआ है। सन् 1941 के चित्रपट 'खजाँची' के एक गीत में जो कि पंजाबी लोक संगीत पर आधारित है, ढोलक का प्रयोग पंजाबी लोक साज ढोलकी के समान प्रत्यक्ष होता हैं। अतः चित्रपट संगीत के शुरूआती दौर से ही पंजाबी लोक गीत एवं वाद्य हिन्दी चलचित्रों में सम्मिलित हो गए थे।

आदिकाल से ही 'वादन' संगीत का एक अभिन्न अंग रहा है, जो उसे और अधिक अलंकृत करता आया है। प्राकृतिक दृश्य, शारीरिक अंग (सीटी-ताली) तत्पश्चात घरेलू बर्तनों के विस्तार से ही संगीत वाद्यो का विकास हुआ है। मटका, लोटा आदि सहज स्वभाव ही सांगीतिक अनुष्ठानों में शामिल हो गए और धीरे-धीरे इन्ही के विकास से अनेक लोक साजों ने जन्म लिया। पंजाब के अनेक लोक साज कालांतर में विकसित हुए हैं एवं गीतों के साथ-साथ, लोकसाजों की विशिष्ट शैली भी पंजाब के लोक संगीत की मौलिक विशेषता बन गई है।

पंजाबी लोक वाद्य

पंजाबी लोक संगीत में लगभग 87 वाद्यों का प्रयोग हुआ देखा जा सकता है, जिसमें उन्नीस पूर्णयता विलुप्त हो गए है। 13 वाद्य विलुप्त होने की कगार पर हैं और 55 आज भी अस्तित्व में हैं। एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन फॉक म्यूजिक में भी पंजाबी लोग संगीत के अंतर्गत 76 लोक वाद्यों की सूची प्रतिपादित की गई मिलती है जो इस प्रकार है(1)

अलगोजा	शहनाई	तुरतुरी	नरसिंहा
बीन	सिंगाही	वंजली	नौबत
बीन बाजा	सुंदरी	नफीरी	पखावज
बुगचू	सुथरा शाही	मृदंग	बैंड बाजा
छज्ज-सोटा	तबला तरंग	नदी तरंग	रबाब
छमुटा	तबला धामा	नगाड़ा	सारंगी
छन्ना	टमक	नगाड़ी	सारिन्दा
चिकारा/चैतारा	तंबूरा	नागोज	सरिया साज़
चिक्का/सप	ताशा	नागफनी	शंख
चिमटा (छैने के साथ)	ताऊस	नद	गागर
चिमटा (बिना छैने के)	थररा	हारमोनियम	घंटी
चुटकी	थाल/थाली	इकतारा/तुंबी	जल्ली
डमरू	घड़ियल	खंजरी	झालर
डमरू(लंबे हत्थे के साथ)	घुँघरू	खड़ताल	खरचम
डंडा सोटा	केल	मंजीरा	किंकरी
डरिया	कोल्ले	इसराज	गड़वा/गड़वी
डफ बड़	किरला/काटो/गलद	दोतारा/तुंबा	ढड
बांसुरी	ढोल	बंबिहा	डुग्गी
डोरू	ढोलकी	थाप ढोल	दिलरूबा

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

इनमें से कुछ साज पूरे भारत में प्रचलित हैं। साज़/वाद्य जो पंजाबी लोकसंगीत की विशिष्ट पहचान बन गए हैं और जिन से पंजाब की सभ्यता एवं प्रांत की विशिष्टता दृष्टिगोचर होती है, उनकी सारिणी निम्न है-ढोल, ढोलकी, डफ, नगाडा, सप्प, काटो, चिमटा, तुंबी, अलगोजे, बीन, ढड, खंजरी, घड़ा/गागर, खड़ताल, मंजीरा, घुंघरू, ढड सारंगी, दिलरूबा, एकतारा, दोतारा, किंकरी, वंजली, सिंगाही।

अवलोकन एवं विशलेषण:

यूँ तो हिंदी चित्रपट संगीत इतना विशाल है कि कहीं न कहीं सभी वाद्य या उनकी ध्वनियों का प्रयोग मिलता ही है, परंतु हिन्दी चित्रपट संगीत में पंजाब के संगीत एवं वादन को मुखर करते बहुदा प्रयुक्त वाद्यों का उल्लेख इस प्रकार है:

- अवनध वाद्य - ढोल, ढोलकी
- घन वाद्य - सप्प, (साँप)
- तत् वाद्य - तुंबी, बुगदु
- सुषिर वाद्य - अलगोज़े

ढोल

ये अवनध वाद्य पंजाबी संगीत में विशेष महत्व रखता है। वहाँ की जोशीली गायकी को और अधिक उत्साहवर्धक बनाने में सहायक होता है। इस पर पंजाबी लय और ताल विशेष लोकप्रिय हो गये हैं। भांगड़ा, बिना ढोल के आनंदित नहीं कर पाता। मेलों, पर्वो और खुशी के अवसरों पर ढोल के साथ नृत्य बहुधा देखने को मिलता है। ढोल ऐसा अवनध वाद्य है जो पंद्रहवीं शताब्दी से संबंध रखता है। यह संभवतः फारसी अवनध वाद्य देहोल (दुहुल) से विकसित हुआ है। (2)

बनावट- ढोल आम की लकड़ी को बीच में से खोखला करके बनाया जाता है। खोल की लम्बाई ढाई से तीन फुट होती है तथा मुख का व्यास लगभग 34 सेमी होता है। खोल के दोनो मुख पर विशेष खाल, खासकर के बकरे की खाल मढ़ी जाती है। इसके एक तरफ की खाल पतली और दूसरे तरफ की मोटी होती है। खाल को सूत की डोरी से खींचकर बांधा जाता है। इसी से ढोल को स्वर बध किया जाता है। ढोल के बंाये मुख को 'धामा' और दाँयें को 'पुडा' कहते है। इसके बाये तरफ 'डग्गा' से बजाया जाता है, जो हॉकी जैसी दिखने वाली छड़ी होती है और दायीं तरफ को बाँसा की छड़ी से बजाया जाता है। ढोल पर पठानिया, सम्मी, झुमर और मारवाड़ी तालों का वादन प्रचलित है।(3)

हिन्दी चित्रपट संगीत में ढोल का प्रयोग विवाह के गानों में या उत्साहपूर्ण गानों में होता है। ढोल पर नृत्य एवं गायन करते, कई फिल्मों में कई गानों का फिल्मांकन किया गया है। ये गीत अत्याधिक लोकप्रिय हुए और फिल्म की पहचान भी बन गये। ऐसे कई चलचित्र हैं जिनका ढोल और भांगड़ा उनकी सफलता का कारण बन गया।

ढोल का प्रयोग सादृश्य करते, हिन्दी चित्रपट गीतों के कुछ उदाहरण निम्न हैं-

- ये देश है वी जवानों का, नया दौर (1957)
- हाय रे हाय मेरी जाँ बल्ले-बल्ले, कश्मीर की कली (1964)
- लड़ी नजरिया लड़ी, वारंट (1975)
- आँखों में सुरमा, एक से बढ़कर एक (1976)
- ओ जट्टा आई बैसाखी, इमानधर्म (1977)
- तेरी रब ने बना दी जोड़ी, सुहाग (1979)
- मैनू इश्क दा लगया रोग, दिल है कि मानता नही (1991)
- मेहन्दी लगा के रखना, दिलवाले दुल्हनिया ले जाऐंगे (1995)
- ना ना नारे, साडे नाल रहोगे, मृत्युदाता (1997)

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

- सोणी सोणी अंखियों वाली, मोहब्बते (2000)
- प्रिटी वुमन, कल हो न हो (2003)
- जुगनी, ओए लकी लकी ओए (2008)
- छल्ला, क्रुक (2009)
- झूठ बोलेया, जॉली एल. एल. बी. (2013)
- लंदन ठुमक दा, क्वीन (2014)

ढोलकी-

फिल्म खजांची (1941) के गानों में ढोलकी पंजाबी ढंग से पहली बार बजी और अपना वर्चस्व अभी तक बनाए हुए है। गुलाम हैदर ने पंजाबी लय और ढोलकी का प्रयोग पूर्णयता पारंपरिक पंजाबी लोक संगीत शैली में किया। "दीवाली फिर आ गई सजनी" गीत की धुन के साथ-साथ उसका फिल्मांकन भी उसी प्रकार किया गया मिलता है। (4)

ढोलकी पंजाब का लोकप्रिय साज है। सामाजिक एवं धार्मिक दोनों प्रकार के कार्यक्रमों में इसका विशेष महत्व रहता है। (5) ये वाद्य स्त्रियों एवं पुरूषों के द्वारा ही बजाया जाता है। ढोलकी की ताल तो जैसे पंजाब के जीवन में भी रच बस गई है। पंजाबी, ढोलकी की ताल ही में जन्म लेते और जवान होते हैं और हर खुशी के मौके पर पहले ढोलकी ही बजती है।

ढोलकी आम, शीशम, नीम, जामुन आदि की लकड़ी से बनती है। इसके दाहिने मुख का आकार बायें मुख से बड़ा होता है। दोनो मुख पर बकरे की खाल मढ़ी जाती है।

ढोलकी को दोनों हाथों से बजाया जाता है। इसको बैठकर या गले में लटका कर भी बजाया जाता है। ढोलकी की मुख्य ताले हैं- ताल मिर्जा, कहरवा ताल, पंजाबी ताल।

1941 में खजांची से प्रारंभ हुई ढोलकी ने अपना अलग स्थान बनाया है और पचास, साठ और अस्सी के दशक तक ये वाद्य हिन्दी चित्रपट संगीत में मुख्य वाद्य रहा है। कुछ प्रमुख लोकप्रिय फिल्मी गीतों, जिनमें ढोलकी का प्रयोग पंजाबी अन्दाज़ में दिखता है उदाहरण निम्न है:-

- दिवाली फिर आ गई सजनी, खजाँची (1941)
- हाए रे उड़-उड़ जाए, मिर्जा साहिबा (1947)
- छल्ला दे जा निशानी, बाजार (1949)
- चुप-चुप खड़े हो, बड़ी बहन (1949)
- की मैं झुठ बोलेया, जागते रहो (1956)
- ले के पहला प्यार, सी.आई.डी. (1957)
- ये देश है वीर जवानों का, नया दौर (1957)
- तुम रूठ के मत जाना, फागुन (1958)
- मेरी जाँ बल्ले-बल्ले, कश्मीर की कली (1964)
- बिन्दिया चमकेगी, दो रास्ते (1969)
- मैं जट यमला पगला दीवाना, प्रतिज्ञा (1975)
- गड्डी जादीं ए छलांगा मारदी, दादा (1979)
- घर आजा परदेशी, दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (1995)

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

- साजन जी घर आए, कुछ-कुछ होता है (1998)
- तुझे याद न मेरी आई, कुछ-कुछ होता है (1998)
- बोले चुडियां, बोले कंगना, कभी-खुशी कभी गम (2001)

उपरोक्त गीतों के अतिरिक्त, हिन्दी फिल्मों में कई गीतों में ढोलक पर पंजाबी वादन शैली स्पष्ट रूप से दिखती है, अपितु इन गीतों के बोल पंजाबी लोक संगीत का कोई आभास नहीं देते जैसेः- "मिलो न तुम तो हम घबराएँ", फिल्म-हीर रांझा (1970) इस गीत में शब्दों के अनुरूप ढोलक का वादन बहुत खूबसूरती से ही किया गया है। "मेंहदी लगा के रखना" फिल्म-दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (1995) गीत की शुरूआत ढोलक वाद्य के घरेलू अंदाज से की गई है। फिल्म-हम आपके हैं कौन (1994) के संगीत में ढोलक का प्रयोग अति उत्तम है।

दलेर मेंहदी साहब के हर गाने में ढोलक का प्रयोग बड़ी सहजता से किया जाता है। प्रसिद्ध ढोलक वादक जसविंदर सिंह जस्सी कई फिल्मी और गैर फिल्मी गायकों के साथ ढोलक बजा चुके हैं, बताते हैं कि ये केवल भारत और पाकिस्तान तक ही सीमित नहीं, बल्कि इसकी लोकप्रियता और भी कई देशों में है।

सप्प (साँप) -

यह पंजाब प्रदेश का विशेष वाद्य है। इसको चिक्का या साँप भी कहा जाता है। मालवा क्षेत्र में भांगड़ा एवं गिद्दा के लोक नाचों में इसका विशेष प्रयोग होता है। इसकी ध्वनि एक साथ बज रही 15-20 तालियों के समान होती है।(6)

सप्प को घन साजों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। ये एक प्रकार का कृत्रिम साँप होता है। इसका रूप कुछ-कुछ बच्चों की खेलने वाले सांप के समान होता है। इसके अनेक रूप अलग-अलग प्रदेशों में देखे जाते हैं। इस साज को बजाने के लिए दोनो हाथों में लेकर खोला और बंद किया जाता है। इस प्रकार पट्टियों के आपस में टकराने से लयात्मक आवाज़ उत्पन्न होती है। इस साज का बहुता प्रयोग नहीं मिलता परंतु फिर भी इसे शोधपत्र में शामिल किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है। क्योंकि इसकी सुंदर आकृति इसे बहुत ही रोचक बना देती हैं। 1956 की फिल्म 'जागते रहो' के गीत "की मैं झूठ बोलया", में इसका प्रयोग फिल्मांकन में स्पष्ट रूप से दिखता हैं यद्यपि ध्वनियांकन में इसकी आवाज स्पष्ट नहीं होती। चित्रपट के गीतों के माध्यम से लोक संस्कृति एवं लोक संगीत के छूपे हुए पहलुओं को सादृश्य करते हुए गीतों के उदाहरणों में यह गीत एक बहुत ही उचित रचना हैं।

बुगदु-

बुगदु एक ही स्वर का वाद्य होता है एवं साधुओं द्वारा बजाया जाता है। बुगदु घीये के खोल से बनाया जाता है। इसके एक मुख पर चमड़ा मढ़ा जाता है और दूसरा मुख खुला रहता है। एक ताँत की बनी तार चमड़े के भीतर निकाली जाती है जिसकी दूसरे छोर पर एक लकड़ी का टुकड़ा लगा होता है। इसके स्वर का उतार-चढ़ाव तार की खिंचाव पर निर्भर करता है। ये पंजाब का अति लोकप्रिय वाद्य है। इस प्रकार के वाद्य का विवरण कई किताबों में 'तुम्बा' वाद्य के अंतर्गत मिलता है।(7)

फिल्म 'नया दौर' के गीत "ये देश है वीर जवानो का", फिल्म 'जागते रहो' के गीत "के मैं झूठ बोलेया" में इसका प्रयोग और फिल्मांकन भी हुआ है।

वर्तमान में इलैक्ट्रानिक वाद्यों के माध्यम से पंजाबी लोक संगीत में प्रयोग हुए वाद्य भी अक्सर हिन्दी चित्रपट संगीत में देखने को मिलते हैं। जिसमें बुगदू की ध्वनि के प्रयोग के उदाहरण निम्न है-

- ओए लक्की-लक्की ओए, ओए लक्की-लक्की ओए (2008)
- जुगनी, तनु वेड्स मनु (2011)
- कतिया करू, रॉकस्टार (2011)

तुंबी-

तुंबी पंजाब के लोक संगीत का बहुत लोकप्रिय और विशेष वाद्य है। पंजाब के लोकगीतों में तुंबी की आवाज बिल्कुल पृथक और विशेष सुनाई देती है। यह बहुत मीठी और रसीली होती है। इसमें स्वरावलियों के साथ-साथ लय का समावेश भी होता है। तुंबी पहले साधु संतो का साज ही माना जाता था।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

पंजाब के लोक गायकों ने भी इसे सहृदय अपनाया। यमला जट्ट और मोहम्मद सदीक ने इसका विशेष प्रयोग किया है। आज भी पंजाबी लोक गीतों के आर्केस्ट्रा में तुंबी का प्रयोग सुनने को मिलता है।

तुंबी को अधिकतर तीन स्वरों का प्रयोग करके बजाया जाता है। अपितु तुंबी में डेढ सप्तक बजाया जा सकता है। (8) यह भंगड़े, टप्पे, प्रेम और वीर गाथाओं के साथ बजाई जाती है। कुछ लोग तुंबी को 'किंगरी' भी कहते हैं।

तुंबी को बजाने के लिए दाएँ हाथ में पकड़, तर्जनी उंगली से तार को निरन्तर छेड़ा जाता है और बायें हाथ के पोरों से तार को दबाकर स्वर निकाले जाते हैं।

तुंबी और इकतारा के प्रयोग के कुछ गीत निम्न है-

- अंखियों को रहने दे, बॉबी (1973)
- लंबी जुदाई, हीरो (1983)
- तुझे याद न मेरी आई, कुछ-कुछ होता है (1995)
- जी करदा बे जी करदा, सिंह इज किंग (2008) (तुम्बी)
- जुगनी, तनु वेड्स मनु (2011) (तुम्बी) (इलेक्ट्रानिक वाद्यों द्वारा तुम्बी की ध्वनि का प्रयोग)
- जुगनी, साहिब बीवी और गैंगस्टर रिटर्न्स (2013)
- दिल्ली वाली गर्लफ्रैंड, ये जवानी हैं दीवानी (2013)

अलगोजे-

यह एक सुषिर वाद्य है। पंजाब के लोक संगीत में अलगोजे का विशेष स्थान है। इसकी आवाज बहुत मधुर एवम् पृथक होती है। यह बांसुरियों की जोड़ी होती है, जिसका स्वर काफी ऊँचा होता है। इन विशेषताओं के बावजूद भी ये अपनी महत्वता खोता जा रहा था, परंतु यमला जट्ट, नरेन्द्र बीबा और गुरमीत बावा आदि जैसे लोक गायकों द्वारा इसके पुनः प्रयोग के कारण ये आज फिर से पंजाब का एक अत्यन्त लोकप्रिय वाद्य बन गया है।

अलगोजे, पंजाब के विभिन्न लोक गीतों के साथ संगत वाद्य के रूप् में प्रयुक्त होते हैं। यह प्रायः एक तारे के साथ जब कोई पूरन भगत का किस्सा या गीत गा रहा होता है तो एक तारे वाले का दूसरा साथी इसे बजाता है। (9) जुगनी, जिन्दमाही और मिर्जा गाते समय भी इसका प्रयोग किया जाता है।

इसके नाद गूण के कारण हिन्दी चित्रपटों में 'भंगडा' प्रधान गीतों मे भी इसका प्रयोग होने लगा है। अलगोजे की दोनो बांसुरियां भिन्न-भिन्न स्वर में मिली होती हैं, जिनमें एक का स्वर अत्याधिक ऊँचा तथा दूसरी सामान्य स्वर में मिलाई जाती है। मुँह से बजाया जाने वाला यह सुषिर वाद्य है और इसे सीधा पकड़कर बजाया जाता है। वादक दोनो ही बासुरियों में एक साथ फूक मारता है और प्रत्येक तीन-तीन छिद्रो पर दोनो हाथों की उंगलियां रखकर संगत की धूने निकालता है।(10) इसको बजाने के लिए विशेष अभ्यास की आवश्यकता होती है।

अलगोज़े के मधुर प्रयोग को निम्नांकित गीतों में देखा जा सकता है-

- सर पे टोपी लाल, तुमसा नही देखा (1957)
- मेरी जाँ बल्ले-बल्ले, कश्मीर की कली (1964)
- नी मैं यार मनाना नी, दाग (1973)
- जी करदा बे जी करदा, सिंह इज किंग (2008)
- ओए लक्की-लक्की ओए, ओए लक्की-लक्की ओए (2008)
- जुगनी, तनु वेड्स मनु (2011)

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

- जुगनी, साहिब बीवी और गैगंस्टर रिटर्न्स (2013)

निष्कर्ष

पंजाबी लोक वाद्यों में सबसे अधिक ढोल एवं ढोलकी का प्रयोग प्रत्यक्ष होता हैं। अपितु अलगोजे, बीन एवं बुगदु भी चलचित्र के गीत अनुसार, अधिकतर गीत की शुरूआत में प्रयुक्त हुए है। तुंबी की विशेष धुन गीतों में एक अलग ही चंचलता एवं मधुरता ला देती हैं। इस शोधपत्र में दी गई गीतों की सूची केवल प्रसिद्ध गीतों को ही शामिल करती हैं परंतु हिंदी चित्रपट में पंजाबी लोक वाद्यों का प्रयोग इससे कही ज्यादा विस्तृत है। बड़े बैनरो की चलचित्रों में अकसर पंजाबी लोक संगीत से प्रेरित गीत का प्रयोग ग्राहता हेतु किया जा रहा हैं, जिसमें दिन-ब-दिन बढ़ोतरी देखने को मिलती है। पंजाबी लोक वाद्य एवं पंजाब क्षेत्रीय वादन शैली अपने आप में एक विशिष्टता लिए हुए हैं जो कि आगे चलकर भी ओर अधिक प्रयोग में आए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

संदर्भ

1. Amrita Priyambada, Encyclopedia of Indian folk music. page 57-60
2. David Courtney, DHOL, http://Chandrakant ha.com/articles/Indian_music/dhol.html
3. डा0 अरविन्द कुमार शर्मा, पंजाब का लोक संगीत, पृष्ठ 83-84
4. Evolution of Hindi film song part-2, http/www.upperstall.com /content/evolution-Hindi-film-song-part-2
5. बलबीर सिंघ पूनी, पंजाबी लोक धारा और सभ्याचार, पृष्ठ 153 भाग-पहला
6. डा0 हरिन्द्र कौर सोहल, पंजाबी गायिकी विभिन्न पासार, पृष्ठ 181
7. डा0 हरिंदर कौर, सोहल, पंजाबी गायिकी विभिन्न प्रसार, पृष्ठ 182
8. (Video) How to play Tumbi-part-1 by Sangtar, https://youtube/yybx1rh11N4
9. बलबीर सिंघ पूनी, पंजाबी लोकधारा और सभ्याचार, पृष्ठ 154, भाग-पहला
10. प्रो. गीता पेंटल, पंजाब की संगीत परम्परा पृष्ठ 229

संदर्भ ग्रन्थ सूची

पैन्तल, गीता (प्रो0). पंजाब की संगीत परंपरा. राधा पब्लिकेशन 4231/1 असारी रोड़, दरिया गंज, नई दिल्ली - 110002

भार्गव, अनिल (डा0). भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चित्रण. कनिष्का पब्लिशर्ज डिस्ट्रीब्यूटर्स (संस्करण-2009)

धनकर, रीता (डा0). 'हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परंपरा. मुरारीलाल स्ट्रीट अंसारी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002 (प्रथम संस्करण)

राग, पंकज. धुनों की यात्रा (हिन्दी फिल्मों के संगीतकर). राजकमल प्रकाशन, प्रा0 लि0 1-बी, नेता जी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली (द्वितीय संस्करण)

शर्मा, अरविन्द कुमार (डा0). पंजाब का लोक संगीत. संजय प्रकाशन अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली।

सिंह गुरनाम (डा0). पंजाबी लोक साज़. गुरू नानक देव युनिवर्सिटी, अमृतसर (संस्करण -2008)

कौर, हरिन्द्र (डा0). पंजाबी गायकी विभिन्न पासार.